ज्वलंत हिंदुत्वाचा पुरस्कार करणारे एकमेव मराठी दैनिक

संस्थापक संपादक : बाळ ठाकरे

सामना

बुधवार, २८ जानेवारी २०१५ वर्ष : २७ अंक : ५ (पृष्ठे १२) मूल्य : ४.०० रुपये ★★ मुंबई आवृत्ती

epaper.saamana.com

शिवसेनेतर्फे सर्वसामान्य मुंबईकरांचा सन्मान

मुंबई, दि. २७ (प्रतिनिधी) - समाजहितासाठी अविरतपणे झटणाऱ्या सर्वसामान्य मुंबईकरांचा 'मी मुंबईकर सन्मान २०१५'ने नुकताच गौरव करण्यात आला. शिवसेना दक्षिण विभाग क्रमांक ८च्या वतीने शिवसेना पक्षप्रमुख उद्धव ठाकरे यांच्या संकल्पनेवर आधारित 'मी मुंबईकर सन्मान २०१५' सोहळा पहिल्यांदाच आयोजित करण्यात आला होता. हा कार्यक्रम मरीन लाइन्स येथील बिर्ला मातोश्री सभागृहात झाला. कार्यक्रमाचे उद्घाटन महाराष्ट्र राज्याचे उद्योग मंत्री आणि मुंबईचे पालकमंत्री शिवसेना नेते सुभाष देसाई यांच्या हस्ते झाले.

शाल, श्रीफळ आणि रोख रक्कम तसेच सन्मानचिन्ह असे पुरस्काराचे स्वरूप होते. मुंबई महानगरपालिकेचे सफाई कामगार विजय अंतू जाधव, बेस्टचे बसवाहक अवधनारायण गंगादीन यादव, बसचालक विलास हरी आंग्रे, परिचारिका रूथ विश्वास इंगळे, वॉर्डबॉय दगडू मामजी गोळे, अग्निशामक कमलाकर वामन कर्णेकर, वर्तमानपत्र विक्रेते हरिश्चंद्र दत्ताराम पवार, मुंबईकरांना जेवणाचे डबे पुरवणारे चिमाजी जबाजी चौरे तसेच आजपर्यंत समुद्रातून १००हून अधिक जीवांचे रक्षण करणारे जीवरक्षक मोहम्मद नजिम शेख, आतापर्यंत ३ हजार ५००पेक्षा अधिक बेवारस मृतांचे अंत्यि संस्कार करणारे शेकर मधुकर मुगलकोड यांचा उपस्थित पाहुण्यांच्या हस्ते गौरव करण्यात आला.

कार्यक्रमासाठी खासदार शिवसेना सचिव अनिल देसाई तसेच खासदार शिवसेना नेते अरविंद सावंत, शिवसेना उपनेते रवींद्र मिर्लेकर, मीनाताई कांबळी आणि अरविंद भोसले प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते. त्यांची यावेळी भाषणे झाली. त्याचबरोबर दक्षिण मुंबईतील नगरसेवक अरुण दुधवडकर, अनिल सिंह, संपत ठाकूर, गणेश सानप, युगंधरा साळेकर आदीही उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे आयोजक दक्षिण मुंबईचे विभागप्रमुख पांडुरंग सकपाळ आणि महिला विभाग संघटक माई परब यांनी प्रेक्षक आणि पाहुण्यांचे आभार मानले.

▶वर्षः २८, अंक १५२, मुंबई, गुरुवार ३ सितंबर २०२० ▶पेज १६ ▶मूल्यः ' ३

एम.सी.डब्ल्यू/१६६/२०१८-२०

दोपहर का

सामना

कोरोना योद्धा सम्मानित

सामना संवाददाता / मुंबई

कोरोना काल में अहम भूमिका निभानेवाले कोरोना योद्धाओं का सम्मान शिवसेना सांसद एवं सचिव अनिल देसाई के हाथों किया गया। कार्यक्रम का आयोजन अखिल चंदनवाड़ी गणेशोत्सव मंडल द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम में मनपा, पुलिस, डॉक्टर तथा अन्य लोग सम्मानित किए गए। शिवसेना सांसद के हाथों सम्मानित होने वालों में मुंबई मनपा सी विभाग

के सहायक आयुक्त चक्रपाणी अल्ले का नाम उल्लेखनीय है। इसी तरह लोकमान्य तिलक मार्ग पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक दीपक निकम, आजाद मैदान पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक विद्याधर कलकुंद्रे का सम्मान श्री देसाई के हाथों किया गया। इसी तरह कालबादेवी ट्रैफिक विभाग के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक नागराज माजगे तथा सी वार्ड के स्वास्थ्य अधिकारी सुरेश उचले का सम्मान माननीय अतिथि के हाथों किया गया। अन्य सम्मानित होने वालों में सेंट जॉर्ज अस्पताल के डीन डॉ. आकाश खोब्रागडे, कामा अस्पताल के डीन डॉ. तुषार पालवे, जी टी अस्पताल के डीन डॉ. चिखलकर, वन रूपी क्लीनिक के डॉ. राहुल घुले, डॉ. विजया चौहान, डॉ. जितेंद्र गिलेटवाला, डॉ. धर्मेश शाह, सामाजिक कार्यकर्ता शंकर अप्पू तथा एंबुलेंस ड्राइवर मोहम्मद सत्तार शेख का सम्मान मुख्य अतिथि के हाथों किया गया। इस अवसर पर शिवसेना उपनेता रवीन्द्र मिर्लेकर, उपनेता मीनाताई कांबली, शिवसेना विभाग प्रमुख पांडुरंग सकपाल सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

▶वर्षः २८, अंक १५४, मुंबई, शनिवार ५ सितंबर २०२० ▶पेज १६ ▶मूल्यः ₹ ३ एम.सी.डब्ल्यू/१६६/२०१८-२०

दोपहर का

सामना

संस्थापक संपादक : बाल ठाकरे

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे का निर्देश

बीडीडी चाल का पुनर्विकास कार्य समय पर पूरा करो!

पेज ३

जय जय... (पेज १ का बाकी)

शंकर मयुकर बताते हैं कि तत्कालीन पुलिस आयुक्त टी के चौधरी से प्रेरणा लेकर उन्होंने एंबुलेंस चलाना शुरू किया था। २०१७ में ग्रेस फाउंडेशन के माध्यम से रेड लाइट एरिया के एच.आई.वी. मरीजों को अस्पताल पहुंचाना शुरू किया। ३,५०० से अधिक लावारिस लाशों तथा अनगिनत मरीजों को वे मुफ्त में अस्पताल पहुंचा चुके हैं। जिनके सिर पर छत नहीं होती और जो लावारिस होते हैं, उन्हें मदर टेरेसा सेंटर पहुंचाया जाता है। कैंसर के अंतिम क्षण वालों को शांति वेदना आश्रम तथा एच. आई.वी. पॉजिटिव को निर्भया निकेतन में दाखिल करवाते हैं। महिलाओं को ज्योति केयर सेंटर कलंबोली, टी.बी. मरीजों को खारघर, जी.टी.बी. अस्पताल शिवड़ी, बूढ़ों को जे.जे. धर्मशाला कमाठीपुरा, तथा मनोरोगियों की कर्जत के डॉ.अडवाणी मेंटल अस्पताल पहुंचा कर उनका इलाज करवाते हैं।शंकर मुगलखोड़ के बारे में जी. टी. बी. अस्पताल शिवड़ी के डॉक्टर ललित कुमार आनंदे कहते हैं कि वह इंसान नहीं बल्कि एक देवदूत है। जिस उम्र में लोग दुनियादारी करते हैं, उस उम्र में इस तरह की सेवा करना मामूली बात नहीं। यही कहना है बोरीवली की डॉक्टर हीना भट्ट का। उन्होंने बताया कि बोरीवली पुलिस स्टेशन के सामने गोराई बस स्टॉप पर कुछ दिनों से एक आदमी अकेला बैठा रहता था। उसकी हालत देख कर मैंने शंकर को फोन किया। वे आए और उस आदमी को अस्पताल ले गए। उसका इलाज करवाया। स्वस्थ होने पर उसके घर पुणे छोड़ आए। शंकर को इस सेवा कार्य के लिए पायधुनी पुलिस स्टेशन, जे.जे. मार्ग पुलिस स्टेशन, डोंगरी पुलिस स्टेशन, माता रमाबाई आंबेडकर पुलिस स्टेशन सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है।

जय जय शिवशंकर...

भूखे को रोटी, बेघर को छत, रोगी को दवा, मृतक को पहुंचाना श्मशान, ये है इनका काम

रवींद्र मिश्रा / मुंबई

मुंबई महानगर की इस भागमभाग वाली जिंदगी में हर इंसान अपनी परेशानियों को सुलझाने में ही व्यस्त है। उसे दूसरे इंसान की मदद के लिए फुर्सत ही कहां है। मगर इस मुंबई में एक ऐसा भी इंसान है, जो भूखे को रोटी, बेघर को छत, बीमार को दवा तथा मृतक को श्मशान पहुंचाना नहीं भूलता। पुलिस स्टेशन या अन्य किसी जगह से आए फोन पर वह अलर्ट हो जाता है। अपनी गाड़ी में प्रथम उपचार का सामान तथा कुछ कपड़े के साथ उस तरफ चल पड़ता है, जहां उसकी जरूरत होती है। वहां पहुंच कर अगर किसी इंसान को भूख लगी होती है तो उसे खाना खिलाता है। घायल है तो मरहम पट्टी करता है। ज्यादा बीमार है तो अस्पताल पहुंचाता है। अगर कोई मृतक है तो पुलिस की एन.ओ.सी. लेकर उसके धर्म के आधार पर उसकी अंतिम क्रिया करवाता है। कोल्हापुर नेपानी के रहने वाले इस इंसान का नाम है शंकर मधुकर मुगलखोड़ और वे २० की उम्र से ही सेवा कार्य कर रहे हैं। उनके इस सेवाभाव को देखकर मुंह से बस यही निकलता है कि जय जय शिवशंकर...! *(बाकी पेज २ पर)*

संस्थापक संपादक : बाल ठाकरे

दोपहर का

सामना

▶वर्षः २८, अंक १९५, मुंबई, शुक्रवार १६ अक्टूबर २०२० ▶पेज १६ ▶मूल्यः ₹ ३ एम.सी.डब्ल्यू/१६६/२०१८-२०

दोपहर का सामना

९३२४१७६७६९

शुक्रवार १६ अक्टूबर २०२०

कमाठीपुरा में टैब लाइब्रेरी

सामना संवाददाता / मुंबई

कमाठीपुरा रेड लाइट एरिया के गरीब बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई के लिए 'ग्रेस फाउंडेशन सामाजिक संस्था' द्वारा मुफ्त टैब लाइब्रेरी का शुभारंभ किया गया। संस्था के अध्यक्ष शंकर अन्ना के अनुसार कोरोना संक्रमण के चलते देश की सभी शिक्षा संस्थाएं बंद हैं। अब छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है।

दक्षिण मुंबई की रेड लाइट एरिया में रहने वाले बच्चे ज्यादातर गरीब हैं। उनके पास कीमती मोबाइल न होने से वे अपनी पढ़ाई से वंचित हो रहे थे। उनकी शिक्षा में बाधा न पड़ें तथा उनकी पढ़ाई सुचारु रूप से चलती रहे इसलिए ग्रेस फाउंडेशन ने यहां टैब लाइब्रेरी के माध्यम से छात्रों को शिक्षा दिलाने का निर्णय लिया। इस लाइब्रेरी में चौथी से लेकर १०वीं तक के छात्रों को सुविधा मिलेगी। फिलहाल यहां पर छात्रों को मुफ्त पढ़ाई के लिए ५ टैब की सुविधा है। अगर कोई दानदाता मिल गया तो यह सुविधा ज्यादा से ज्यादा गरीब बच्चों को मिले, यही संस्था की चाहत है। यह कहना है संस्था अध्यक्ष शंकर मुगलखोड़ का। उन्होंने आशा जताते हुए कहा है कि सामाजिक संस्थाएं इस कार्य में उन्हें अवश्य मदद करेंगी।

Shanti Avedna Sadan

Tel. : 022-2645 1702
022-2642 7464
Off. : 022-2642 1889
022-2645 4590

216, Mount Mary Road,
Bandra (W), Mumbai - 400 050.
E-mail : shantiavednasadan@gmail.com
Website : www.shantiavednasadan.in

Shankar M. MugalKhod
Grace Foundation

16.12.2020

Dear Shankar,

We appreciate and thank you for the humanitarian work you are doing for the needy and destitute patients. We too have experienced and received your help in reaching our patients home and taking the dead body for cremation. May God bless you and your initiative to reach out to every needy person. May you be strengthened and supported by many more generous people.

Wishing you all the best for the year ahead.

Sr Ancy

Sr.Ancy
Administrator
Shanti Avedna Sadan

SHANTI AVEDNA SADAN
216, Mount Marry Road,
BANDRA (W),
MUMBAI - 400 050.

Chairman
VISPI DASTUR

Hon. Secretary
SUMAN ANAND

Hon. Treasurer
DEANNA JEJEEBHOY

Trustees
Dr. ROSHAN DASTUR
KHORSHED JAVERI
ROHINGTON ANKLESARIA

DISTRICT BENEVOLENT SOCIETY OF BOMBAY

SIR JAMSETJEE JEJEEBHOY DHARAMSHALA

Jehangir Boman Behram Rd., Nagpada Junction, Mumbai - 400 008
Tel. : 23079838 / 65241666 • E-mail : jjdharamshala60plus@gmail.com

CERTIFICATE OF APPRICIATION

To

SHANKAR MADHUKAR MUGALKHOD
GRACE FOUNDATION

Respected Sir,

As an Institution, when we look down the memory lane for the past many years, we can think of great people who have made our journey memorable with many cherished moments of cooperation and support in several successful endeavors.

We have an inseparable with your free services of Ambulance to our NGO. **WE AT THE OLD AGE HOME FEEL PROUD AND BLESSED OF YOUR PRESENCE BEING PART OF SIR J. J. DHARAMSHALA HISTORY.**

We are proud and overwhelmed by the magnanimous help you have given to the oldies at the time when their own relatives and the society ignored and abounded them. It was only because of your efforts as if being a **GOD SEND MESSANGER OF LOVE AND KINDNESS** that these deprived people left alone on footpaths could get dignified life in Mumbai.

WE SIR J.J. DHARAMSHALA THANK HIM FOR SINCERE EFFORTS AND CARING COMMITMENT FOR THE SOCIAL CAUSE OF HUMANITY.

WE WILL BE GREATFUL AND OBLIGED IF THIS ASSOCIATION WITH YOU CONTINUES IN THE SAME MANNER FOR THE YEARS TO COME.

Thanking you

Trupti Jadhav
Coordinator
Sir. J.J. Dharamshala.

SIR JAMSETJEE JEJEEBHOY
DHARAMSHALA
Dist. Benevolent Soc. of Bombay,
Jegangir Boman Behram Road,
Nagpada Junction, Mumbai - 400 008.
Ph. 2307 98 38 / 8655241666

26/JAN/2020

SIR J. J. MAHANAGAR RAKTAPEDHI

MANAGED BY S.B.T.C., Govt of Maharashtra

Byculla, Mumbai - 400 008. Phone No. : 022-23735585 / 23733531 / 32

सत्यमेव जयते

Certificate

Shri / Smt. / M/s. GRACE FOUNDATION

Has organised blood donation drive successfully and motivated the community to participate in voluntary Blood donation drive.

For this noble social cause we highly appreciate your efforts & in your honour this certificate is issued.

SIR J.J. MAHANAGAR RAKTAPEDHI MUMBAI

Authorised Signatory

SBTC
State Blood Transfusion Council

NABH
Accredited Blood Bank
Certificate No :BB-2011-0027

THE INQUILAB

قوموں کی حیات ان کے تخیل پہ ہے موقوف (اقبالؔ)

بانی: عبدالحمید انصاری مرحوم، قیمت: ۷ روپے، ۱۲ صفحات، ممبئی، جمعرات، ۱۴ مئی ۲۰۲۰ء، ۲۰ رمضان المبارک ۱۴۴۱ھ

ww.inquilab.com | epaper.inquilab.com

وطن جانے کیلئے احتجاج کرنے والے مزدوروں پر لاٹھی چارج

بیلاسس روڈ کا واقعہ، ۲۰ سالہ نوجوان بری طرح زخمی، پولیس نے انہیں وطن روانہ کرنے کی کارروائی کے بارے میں بتایا اور بعد میں بھیڑ ہٹانے کیلئے لاٹھیاں برسائیں

دائیں جانب زخمی نوجوان صدام، دوسری تصویر میں پولیس اہلکار مزدوروں پر لاٹھیاں برساتے ہوئے، تیسری تصویر میں بیلاسس روڈ پر جمع مزدور

سعادت خان

ممبئی: بیلاسس روڈ پر بدھ کی صبح ۱۰ بجے سیکڑوں مزدوروں نے آبائی وطن جانے کیلئے احتجاج کیا۔ سیکڑوں مزدوروں نے گاؤں جانے کیلئے ہونے والی کارروائی میں تاخیر کے سبب رین گیسٹ ہاؤس کے قریب جمع ہوکر اپنی ناراضگی کا اظہار کیا۔ پولیس نے پہلے انہیں گاؤں روانہ کرنے کیلئے کی جانے والی کارروائی کے بارے میں مائیکروفون کے ذریعے اطلاع دی بعدازیں مجمع اکٹھا کرنے کی بنیاد پر ان مزدوروں پر لاٹھی چارج کیا۔ جس سے یہاں بھگدڑ مچ گئی۔ لوگ ایک دوسرے پر گرنے پڑنے لگے ۔جس کی وجہ سے متعدد مزدور زخمی ہوئے ہیں۔ اسی دوران پولیس نے محمد صدام نامی ایک مقامی نوجوان کو مزدور سمجھ کر بری طرح زدوکوب کیا جس سے اس کے ایک ہاتھ کی ہڈی فریکچر ہوگئی اور پیر میں بھی شدید چوٹ آئی ہے۔ یہاں شام ۵ بجے اسی مقام پر دوبارہ مزدور جمع ہوئے اور انہیں منتشر کرنے کیلئے پولیس نے ایک مرتبہ پھر طاقت کا استعمال کرتے ہوئے لاٹھی چارج کیا۔

کماٹی پورہ ۱۴ ویں گلی میں رہنے والے محمد صدام کے پڑوس میں رہنے والی خاتون نے بتایا کہ ”صدام تو گھر کے باہر بیٹھا تھا۔ اچانک پولیس نے یہاں جمع مزدوروں پر لاٹھی چارج کرنا شروع کردیا تھا جس سے بھگدڑ مچ گئی۔ اس دوران ۴ پولیس والوں نے صدام کو بھی بری طرح زدوکوب کیا۔ مار کی شدت سے اس کے ایک ہاتھ کی ہڈی فریکچر ہوگئی ہے اور پیر میں بھی چوٹ آئی ہے۔ اسے علاج کیلئے جے جے اسپتال لے جایا گیا۔ جہاں ڈاکٹروں نے علاج کرکے اسے گھر روانہ کردیا ہے۔“ اس خاتون نے یہ بھی بتایا کہ ” پولیس کی مار سے بچنے کیلئے مزدور ایک دوسرے پر گر پڑ رہے تھے۔ بھاگ دوڑ میں گرنے والے مزدوروں کے چپل جوتے کے ساتھ متعدد موبائل فون بھی گرے پڑے تھے جنہیں پولیس نے اپنے قبضے میں لے لیا ہے۔“ صدام کو ایمبولنس سے جے جے اسپتال لے جانے والے سماجی کارکن شنکر کے مطابق ”صدام کے ہاتھ میں زبردست چوٹ آئی ہے جس سے وہ ہاتھ نہیں اٹھا پا رہا ہے۔ حالانکہ مظاہرہ کرنے والے مزدوروں سے اس کا کوئی لینا دینا نہیں تھا۔ وہ تو صرف باہر کھڑا تھا لیکن پولیس والوں کی لاٹھی سے لگنے والی چوٹ سے وہ شدید زخمی ہوا ہے۔“

”بیلاسس روڈ پر واقع ضیاء اپارٹمنٹ کے مکین سلطان احمد پنجی نے بتایا کہ ”میں اپنی گھر کی بالکنی سے دیکھ رہا تھا۔ نگینہ ہوٹل سے فارس روڈ کی جانب جانے والے راستہ پر سیکڑوں مزدور اکٹھا تھے۔ پہلے ایک پولیس کی گاڑی آئی۔ اس گاڑی سے اتر کر ایک پولیس اہلکار نے ان مزدوروں کو مخاطب کرتے ہوئے کہا کہ ”آپ لوگوں کو گاؤں روانہ کرنے کی کارروائی انجام دی جارہی ہے۔ سب کے درخواست فارم ہمارے پاس موجود ہیں۔ ہم ان درخواستوں کے مطابق مزدوروں کو گاؤں روانہ کرنے کی تیاری کررہے ہیں ۔ ریلوے انتظامیہ سے بھی ہماری بات جاری ہے جیسے ہی ٹرین کا انتظام ہوگا آپ لوگوں کو موبائل نمبر پر اطلاع دی جائے گی۔ بعدازیں آپ کو گاؤں روانہ کیا جائے گا۔“ یہ اعلان سن کر کچھ مزدوروں نے اعتراض کیا کہ کب سے کارروائی ہورہی ہے۔ ہمیں کب روانہ کیا جائے گا۔ اسی دوران ناگپاڑہ پولیس اسٹیشن کی سینئر پولیس انسپکٹر شالنی شرما جائے وقوع پر پہنچیں اور مجمع دیکھتے ہی انہوں نے پولیس والوں کو سرگوشی کے انداز میں کچھ ہدایت دی اور دیکھتے ہی دیکھتے پولیس نے لاٹھی چارج کرنا شروع کردیا۔ جس سے بھگدڑ مچ گئی۔“

جائے وقوع پر موجود جمیل احمد نے بتایا کہ ”تقریباً ساڑھے ۱۰ بج رہے ہوں گے۔ پہلے پولیس کی ۲ روین آئی۔ جس نے کسی طرح کی کوئی کارروائی نہیں کی لیکن سینئر پولیس انسپکٹر شالنی شرما کے آنے کے بعد پولیس نے لاٹھی چارج شروع کردیا جس سے افراتفری کا ماحول پیدا ہوگیا۔ کئی افراد بھاگ دوڑ میں معمولی طور پر زخمی بھی ہوئے ہیں۔“ اس تعلق سے استفسار کیلئے انقلاب نے شالنی شرما سے موبائل پر رابطہ کرنے کی کوشش کی لیکن انہوں نے فون ریسیو نہیں کیا۔

THE INQUILAB

انقلاب

قوموں کی حیات اُن کے تخیل پہ ہے موقوف (اقبال)

www.inquilab.com

شاودنتا مدھوکر منگل کھوڑ ۲۵۰ رایچ آئی وی پازیٹیو بچوں کی بازآبادکاری کر چکی ہیں

بزرگوں کا قول ہے کہ جس نے غریبی، مفلسی، مجبوری، لاچاری اور بے بسی کو قریب سے دیکھا ہے وہ غریبوں اور مجبوروں کی مجبوریوں کو زیادہ بہتر سمجھتا ہے۔ ممبئی سینٹرل بی آئی ٹی چال کی ۵۵ رسالہ شاودنتا مدھوکر منگل کھوڑ اس کی واضح مثال ہیں۔ انہوں نے بچپن سے ہی دکھ، درد، بھوک اور پیاس میں خود کو گھرا پایا۔ بدقسمتی سے شادی بھی ایسے شخص سے ہوئی جو شرابی تھا غرضیکہ شاودنتا کی زندگی نے ہمیشہ ان سے قربانی طلب کی مگر وہ ہمت نہیں ہاریں۔ شاودنتا کو اس وقت بہت گہری ذہنی چوٹ پہنچی جب ان کی چھوٹی بہن اور اس کا شوہر ایک سڑک حادثہ میں ہلاک ہو گئے اور ان کی ۴ر بچیوں کی پرورش کی ذمہ داری بھی شاودنتا پر آن پڑی۔ اسی دوران شاودنتا کے شوہر کا بھی انتقال ہو چکا تھا۔ اب شاودنتا کو اپنے ۳ر بیٹوں کے علاوہ اپنی بہن کی ۴ر بیٹیوں کو بھی پالنا تھا لیکن اس باحوصلہ خاتون نے ہمت نہیں ہاری اور سبھی بچوں کو پالنے کا بیڑا اٹھایا۔ اس کے لئے انہوں نے اپنے سر پر ایک مخصوص مورتی رکھ کر گھر گھر جاکر بھیک مانگی اور اس سے جمع ہونے والی رقم سے بچوں کی پرورش کی نیز انہیں اچھی تعلیم بھی دلوائی۔ نتیجہ یہ ہے کہ آج ان کی بہن کی ۲ر بیٹیاں میڈیکل سوشل ورکر ہیں جبکہ ایک نرس ہے اور ایک پرائیویٹ فرم میں اعلیٰ عہدے پر فائز ہے۔ خود شاودنتا کے بیٹے بھی اعلیٰ تعلیم حاصل کرنے کے بعد مختلف شعبوں میں ملازمت کر رہے ہیں۔

یہ تو رہا شاودنتا کی ذاتی زندگی کا ایک حصہ۔ شاودنتا کی زندگی کا دوسرا حصہ اس سے بھی زیادہ اچھوتا اور دل میں گھر کر جانے والا ہے۔ چونکہ شاودنتا بھیک مانگنے کیلئے اکثر کماٹی پورہ کے علاقوں میں جایا کرتی تھیں اس لئے انہوں نے یہاں جسم فروش خواتین کے مسائل کو قریب سے دیکھا کہ کس طرح غریبی اور مفلسی کی وجہ سے جسم فروشی پر مجبور لڑکیوں کا ان کی مالکین استحصال کرتی ہیں اور انہیں کس طرح کی بیماریوں کا سامنا کرنا پڑتا تھا۔ ان کی تکلیفوں کو محسوس کرتے ہوئے شاودنتا نے اپنی بقیہ زندگی ان کے لئے وقف کر دینے کا فیصلہ کیا۔ اس کے لئے انہوں نے ناگپاڑہ پر واقع غیر سرکاری تنظیم "تیمن چیلنج" سے رابطہ کیا۔ ادارے نے شاودنتا کے جذبہ کو دیکھتے ہوئے ہر ممکن تعاون کا وعدہ کیا۔ یہ ۱۹۹۶ء کی بات ہے اور تب سے آج تک شاودنتا ان خواتین اور ان کے بچوں کی خدمت میں لگی ہوئی ہیں۔ شاودنتا خصوصی طور پر ایسی خواتین اور بچوں کیلئے سرگرم رہتی ہیں جو ایچ آئی وی میں مبتلا ہیں۔ شاودنتا اب تک تقریباً ۲۵۰ رایچ آئی وی پازیٹیو بچوں کو بدلاپور میں واقع جبلی آشرم میں منتقل کر چکی ہیں جہاں ایسے بچوں کی نگہداشت کا انتظام ہے۔ عالمی یوم خواتین کے موقع پر انہوں نے کہا کہ "اس میں کوئی شک نہیں کہ عورتوں کو زیادہ امتحان دینا پڑتا ہے لیکن اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں ہے کہ وہ ہمت ہار جائیں۔ اپنی پریشانیوں پر قابو پانے کیلئے انہیں حالات کا سامنا بہادری اور مستقل مزاجی سے کرنا چاہئے۔ یہی اس عالمی یوم خواتین پر میرا خواتین کے نام پیغام ہے۔" ■ (س خ)

"کوئی مودی کو بتائے
میں سب ٹھیک نہیں ...

کویت میں پہلی مرتبہ ...
خاتون کو وزیر خزانہ مقر...

گیند بازوں کی بہترین گیند بازی کے
سبب کامیابی ملی ہے: روہت شرما

ٹیم انڈیا کے قائم مقام کپتان روہت شرما نے بنگلہ دیش کیخلاف فتح کا سہرا ٹیم انڈیا کے گیند بازوں کے سر باندھا ہے۔ انہوں نے کہا کہ ٹیم کی بہترین گیند بازی نے فتح دلوائی ہے۔
> صفحہ ۱۴ ر پر

انقلاب
THE INQUILAB
قوموں کی حیات ان کے تخیل پہ ہے موقوف (اقبالؔ)

Pages 14, Mumbai, Tuesday, November 12, 2019, Vol 82, Issue 307 | www.inquilab.com | epaper.inquilab.com | ... روپے، ۱۴ر صفحات، ممبئی منگل، ۱۲ر نومبر ۲۰۱۹ء، ۱۴ر ربیع الاول ۱۴۴۱ھ

خدمت خلق کرنے والے شنکر کو، عید میلاد النبیؐ کے موقع پر تحفہ میں ایمبولنس دی گئی

ایچ آئی وی اور کینسر کے مریضوں کو نہ صرف طبی مدد فراہم کرتے ہیں بلکہ لاوارث لاشوں کی آخری رسوم بھی ادا کرتے ہیں، میمن جماعت کے ذریعے دی جانے والی ایمبولنس پولیس کمشنر کے ہاتھوں شنکر کو سونپی گئی

ندیم عصران

ممبئی: "پورے دن میں اگر ایک نیکی کا کام نہ کرلوں تو مجھے لگتا ہے کہ مجھ سے آج کوئی گناہ سرزد ہو گیا ہے۔" بلا تفریق مذہب انسانی خدمت کو اپنا نصب العین بنانے والے اس نوجوان کا نام شنکر ہے۔ شنکر مدنپورہ مغل کھو نہ صرف ایچ آئی وی، کینسر اور ٹی بی جیسے موذی مرض میں مبتلا اُن بے سہاروں کا سہارا بنتے ہیں جنہیں مرنے کے لئے فٹ پاتھوں پر چھوڑ دیا جاتا ہے بلکہ ایسی لاوارث لاشوں کی آخری رسومات تک ادا کرتے ہیں جن کے رشتہ دار اور دوست احباب کا پتہ نہیں چلتا۔

تقریباً ۲۰ ر برسوں سے بے لوث انسانی خدمت انجام دینے والے اس نوجوان کو بروز اتوار جشن عید میلاد النبیؐ کے موقع پر ممبئی پولیس کمشنر سنجے بروے کے ہاتھوں نہ صرف اعزاز سے نوازا گیا بلکہ نوجوان کی حوصلہ افزائی کرتے ہوئے اور اس کے نیک مقصد کو مزید تقویت پہنچانے کے لئے شنکر کی تنظیم 'گریس فاؤنڈیشن' کو آل انڈیا میمن جماعت فیڈریشن کی جانب سے ایک ایمبولنس بھی دی گئی۔

شنکر میں ان بے سہارا، مجبور لوگوں جو سماج اور زمانے کے ستائے ہوئے ہیں، کی خدمت کرنے کا جذبہ بھی ان کی والدہ کی مرہون منت ہے۔ جب وہ ۱۹ ر سال کے تھے تب ۱۹۹۵ء سے ان کی والدہ نے بدنام زمانہ علاقہ کمائی پورہ سے ایسی خواتین کو طبی سہولت فراہم کرنے کا سلسلہ شروع کیا جنہیں ایچ آئی وی جیسے مرض میں مبتلا ہونے کے بعد لاوارث و بے یار و مددگار چھوڑ دیا جاتا تھا۔ شنکر کے بقول میری ماں نے ایسے وقت میں اُن بے سہارا اور مجبور خواتین کی مدد کرنے کا سلسلہ شروع کیا تھا جب ہم ۵ ر بہن بھائی خود بے سر و سامانی کا شکار تھے اور کھانے پینے کے محتاج ہوا کرتے تھے۔

والدہ کی اسی انسان دوستی نے مجھ میں بھی ان سے رحم نہیں بلکہ محبت کرنے کا جذبہ پیدا کیا اور یہی وجہ ہے کہ اب میں اپنی تنظیم 'گریس فاؤنڈیشن' اور اپنے دیگر رساتھیوں کی مدد سے نہ صرف ایچ آئی وی جیسے موذی مرض میں مبتلا بلکہ کینسر اور ٹی بی جیسے مرض میں مبتلا اُن افراد کی مدد کرنے کی کوشش کرتا ہوں جنہیں ان کے اہل خانہ، دوست احباب و رشتہ دار مرنے کیلئے سڑکوں پر چھوڑ جاتے ہیں۔ شنکر کے بقول وہ اور ان کی تنظیم کو مسلسل ۲۰ ر برسوں سے خدمت خلق کرنے کے سبب کئی اعزازات اور انعامات سے نوازا گیا ہے لیکن انہوں نے یا ان کی ٹیم نے شہرت یا نام و نمود سے پرے اپنی کوشش جاری رکھی ہے۔

شنکر اور ان کی تنظیم کا جائزہ لینے کے بعد یہ بھی معلوم ہوا ہے کہ شنکر وہ شخص ہیں جنہوں نے سماجی خدمت کرنے والی تنظیموں اور پولیس کی مدد سے تقریباً ۴ ر ہزار سے زائد ایسی لاوارث لاشوں جن میں ہندو مسلم بھی شامل تھے، کی آخری رسومات ان کے مذہب کے مطابق خود ادا کی ہے۔

انہوں نے اپنی بے شمار خدمات میں سے ایک کا تذکرہ کرتے ہوئے بتایا کہ بدنام زمانہ علاقے کمائی پورہ میں ایک خاتون جسے بنگال سے جبراً ممبئی لایا گیا تھا اور اسے جسم فروشی کے دلدل میں ڈال دیا گیا تھا، جب اسے ایچ آئی وی ہوا تو اسے سڑک پر مرنے کے لئے پھینک دیا گیا تھا۔ شنکر اور ان کی ٹیم اُس عورت کے لئے مسیحا بن کر سامنے آئی اور انہوں نے نہ صرف اس کا علاج کرایا بلکہ روبہ صحت ہونے کے بعد اسے اس کے آبائی وطن تک جانے کا بندوبست بھی کیا تھا۔

سڑکوں پر بے یار و مددگار مختلف موذی بیماریوں کے سبب تل تل مرنے والوں کو تو ہم سب دیکھتے ہیں اور ان کے قریب سے گزرتے وقت ان کے جسم سے اٹھنے والی بدبو سے کراہیت کا اظہار کرتے ہوئے وہاں سے گزر بھی جاتے ہیں لیکن شنکر اور ان کی ٹیم مدنپورہ میں آشادان جیسی تنظیم کے ساتھ مل کر بذات خود ان کی مرہم پٹی، انہیں نہلانا دھلانا ہی نہیں بلکہ انہیں مکمل طبی سہولت فراہم کرنے کیلئے اسپتالوں کے آگے ہاتھ پھیلا کر ان کے داخلہ اور علاج کو بھی یقینی بناتے ہیں۔

عید میلاد النبیؐ کے موقع پر شنکر اور ان کی تنظیم کو مزید مستحکم بنانے کے مقصد سے ہی آل انڈیا میمن جماعت فیڈریشن نے ان کی حوصلہ افزائی کرتے ہوئے ممبئی پولیس کمشنر سنجے بروے کے ہاتھوں بے سہارا مجبور لوگوں کی مدد کے لئے ایمبولنس تحفہ میں دی ہے۔

ممبئی پولیس کمشنر سنجے بروے، شنکر کو ایمبولنس کی چابی دیتے ہوئے۔ دائیں جانب والی تصاویر میں شنکر کو مہلک مرض میں مبتلا مریضوں کے ساتھ دیکھا جاسکتا ہے۔ (تصاویر: انقلاب)

THE INQUILAB

انقلاب

قوموں کی حیات اُن کے تخیل پہ ہے موقوف (اقبالؔ)

www.inquilab.com

Now open at Surat also.
dawood khan
Tailors And Clothiers
Bhendi Bazar : 23472786 • Mahim : 2445657
Andheri Oshiwara : 26363356 • Surat : 2261-243

₹ 5.00 ◆ 12 pages ◆ Mumbai ◆ Monday, February 09, 2015 ◆ Vol: 78 ◆ Issue: 39

الحمید انصاری مرحوم ◆ قیمت: ۵ روپے ◆ ۱۲ صفحات ◆ ممبئی ◆ پیر، ۹ فروری ۲۰۱۵ء ◆ ۱۹ ربیع الآخر ۱۴۳۶ھ

کماٹی پورہ کے شنکر مدھوکر، انتہائی غربت نے جنہیں لاوارثوں کا مسیحا بنا دیا

انہوں نے ۱۹ برس کی عمر سے اپنی پوری زندگی کو غریبوں اور مجبوروں کیلئے وقف کرنے کا عزم کیا تھا، ایک غیر سرکاری تنظیم کی مدد سے وہ ایمبولنس کے ذریعے بلاتفریق مذہب ۳ ہزار لاشوں کی بالکل مفت آخری رسوم ادا کر چکے ہیں۔ انہی فلاحی کاموں کیلئے انہیں گزشتہ سال 'می ممبیکر' کے اعزاز سے نوازا گیا تھا

سعادت خان

کماٹی پورہ: "یہاں کی ۱۴ ویں گلی کی فٹ پاتھ سے میرا بہت قریبی رشتہ ہے۔ میں نے اس گلی میں زندگی کی ان سچائیوں کو دیکھا ہے جنہیں میں تاحیات فراموش نہیں کر سکتا۔ یہ وہ گلی ہے جہاں کبھی میں رات کو بھوکا سویا تو کبھی دن بھر دو وقت کی روٹی حاصل کرنے کیلئے جدوجہد کرتا رہا۔ غرضیکہ اس گلی نے مجھے بھوک، پیاس، دکھ درد، غریبی، مفلسی، مجبوری اور لاچاری کا ایسا درس دیا ہے جسے میں ہمیشہ اپنے قریب پاتا ہوں اسی لئے میں نے ۱۹ برس کی عمر سے یہ فیصلہ کیا تھا کہ میں اپنی پوری زندگی غریبوں اور مجبوروں کی خدمت میں گزاروں گا لہٰذا میں کوشش کرتا ہوں کہ پورے دن میں کوئی نہ کوئی ایک اچھا عمل کروں جس سے میری موت کے بعد کی زندگی سنور جائے۔" ان خیالات کا اظہار ۳۶ سالہ شنکر مدھوکر منگل کھوڈے نے کیا جو گزشتہ ۱۵ برسوں سے شہر اور مضافات کی ۳ ہزار لاوارث لاشوں کی بالکل مفت میں آخری رسوم ادا کر چکے ہیں جن میں تقریباً ۹۰۰ مسلم افراد کی لاشیں بھی شامل ہیں۔

شنکر مدھوکر منگل کھوڈے اپنی ایمبولنس کے ساتھ۔

شنکر نے اس تعلق سے نمائندۂ انقلاب کو بتایا کہ میرا بچپن انتہائی غریبی میں گزرا ہے۔ میری والدہ نے بڑی کسمپرسی کے عالم میں ہم ۵ بھائی بہنوں کی پرورش کی۔ مفلسی نے میری والدہ اور مجھ میں غریبوں کیلئے کچھ نہ کچھ کر گزرنے کا جذبہ پیدا کیا۔ میری ماں نے ہی مجھ میں فلاحی کام کرنے کا جذبہ پیدا کیا لہٰذا ۱۹۹۹ء میں، میں نے فیصلہ کیا کہ ان غریبوں اور مفلسوں کی مدد کروں گا جن کا کوئی پرسانِ حال نہیں۔ سو میں نے بامبے مین چیلنج نامی غیر سرکاری تنظیم سے رابطہ قائم کیا اور اسے اپنے منصوبے کے بارے میں بتایا۔ اس تنظیم نے مجھے پہلے ایک ایمبولینس فراہم کی اور کہا کہ اس کی مدد سے میں لاوارث لاشوں کی آخری رسوم ادا کروں اور مریضوں کی مدد کروں۔ چنانچہ اس وقت سے میں شہر و مضافات میں لاوار لاشوں کی ان کے مذہب کے مطابق آخری رسم ادا کرنے کا عمل انجام دے رہا ہوں۔ اب تک تقریباً ۳ ہزار لاشوں کی آخری رسوم ادا کر چکا ہوں۔ ان میں کم و بیش ۹۰۰ مسلمان تھے جن کی تدفین کی گئی ہے۔ یہ پوچھے جانے پر کہ لاوارث مسلم افراد کی لاشوں کی تدفین کیلئے وہ کیا کرتے ہیں تو شنکر نے بتایا کہ میں عموماً ان لاشوں کو پولیس کی مدد سے ناریل واڑی قبرستان پہنچا دیتا ہوں۔ بقیہ کام وہاں کا انتظامیہ انجام دیتا ہے۔

لاوارث لاشوں کے علاوہ سڑکوں اور فٹ پاتھوں پر پڑے بیماروں کو علاج کیلئے اسپتالوں میں داخل کرانے کیلئے بھی شنکر اپنی ایمبولینس کا استعمال کرتا ہے اور اس کیلئے وہ کسی سے ایک روپیہ بھی نہیں لیتا۔ شنکر مدھوکر منگل کھوڈ کے بقول انسانیت سب سے بڑا مذہب ہے اور ایک انسان اگر کسی پریشان حال انسان کی مدد کرتا ہے تو یہ سب سے بڑا کام ہے۔ انہوں نے بتایا کہ "میں صبح اٹھتا ہوں تو میری یہ خواہش ہوتی ہے کہ دن بھر میں کم از کم ایک اچھا کام کروں۔"

شنکر کی ان ہی سماجی اور فلاحی خدمات کو دیکھتے ہوئے اسے گزشتہ دنوں شیوسینا کی جانب سے جنوبی ممبئی کے رکن پارلیمان اروند ساونت کے ہاتھوں 'می ممبیکر' کے اعزاز سے نوازا گیا تھا۔

شنکر کی سماجی خدمات کے بارے میں جب کماٹی پورہ علاقے کے قریب رہائش پذیر محمد سلیم انصاری سے گفتگو کی گئی تو انہوں نے کہا کہ میں گزشتہ ۱۰ برسوں سے شنکر کو بہت قریب سے جانتا ہوں۔ وہ غریب مریضوں اور لاوارثوں کا مسیحا ہے۔ بڑی خندہ پیشانی سے لاوارث لاشوں چاہے وہ کسی بھی مذہب کے ماننے والے کی کیوں نہ ہو، پوری ذمہ داری کے ساتھ قانونی طور پر اس کی آخری رسم ادا کرتا ہے۔ وہ ایک نیک صفت انسان ہے اور ہم سب کیلئے ایک عمدہ اور اعلیٰ مثال بھی۔ ناریل واڑی قبرستان کے موذن عزیز عبدالکلام نے شنکر کے بارے میں کہا کہ یہ صحیح ہے کہ شنکر یہاں پر لاوارث مسلم افراد کی لاشوں کو لاتا ہے اور ہم ان کی تدفین کرتے ہیں۔

BENNETT, COLEMAN & CO. LTD. | ESTABLISHED 1838 MUMBAI | THURSDAY, JUNE 25, 2020 | PAGES 16

THE TIMES OF INDIA

PRICE ₹7.00 ALONG WITH MUMBAI MIRROR OR THE ECONOMIC TIMES OR MAHARASHTRA TIMES*

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER

NGO lends a hand to commercial sex workers but it's not enough

Ciara.Lewis@timesgroup.com

Mumbai: It is no longer easy finding customers but commercial sex workers (CSWs) in Kamathipura do try to solicit by walking the streets.

"The lockdown has been very hard on us. Prerna (NGO) gave us some ration, so did the church and Shankar Anna. With no work there is no money even to pay rent. Some of them stand on the roads in the evening but hardly anybody comes," said Seema Sarkar.

Raziya Biwi, another CSW, said there was no money for rent or medicines. "I have three children in Kolkata. I have no money for food, so how do I send them money? People have been kind, offering ration, but it is not enough," she said.

Parwati Naudiyal, a Powai resident, raised money from friends and relatives to provide rations to CSWs but has enough to provide essential kits to only 300, while there are 2,000 of them.

"We will distribute that on Friday, but we would like to help all," she said. Naudiyal was approached by a friend working with a local NGO that raised funds in the name of Kamathipura but used it elsewhere. "She knew I was helping people at Vikhroli Parksite, so she told me to help here too. CSWs were highly appreciative of help by Prerna, but need more," said Naudiyal.

Many CSWs have been brought here forcibly or tricked into the flesh trade. "They cannot avail of essentials from public distribution system as they do not have a ration card," said Naudiyal.

Prerna founder Priti Patkar said it was unfortunate the government had not offered any package to the women in debt. "We tried our best to give them essentials but it is for 15 days at a time. The government must offer them another sustainable source of livelihood," she said.

(To help, you can contact Priti Patkar on 9821274865 or Parwati Naudiyal on 9987783192)

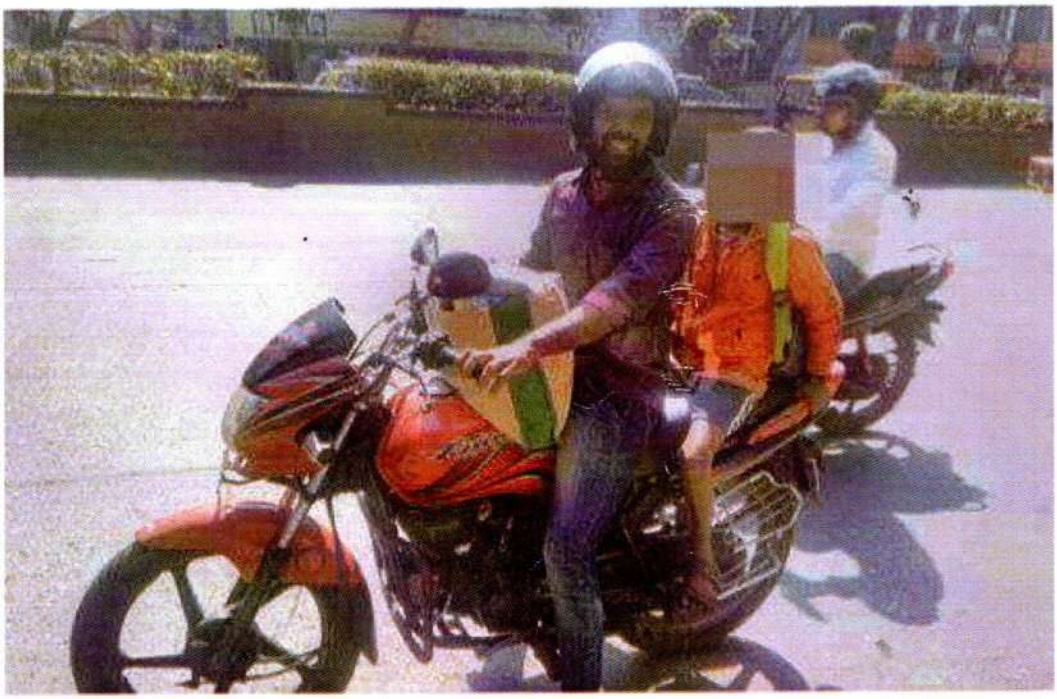

शंकर मुगलखोड मुंबई सेंट्रलला रहात असून पहिल्यांदा घरची परिस्थिती फार बिकट होती. शंकर यांच्या आई 1995 सालापासून मुंबईतील कामाठीपुरा या 'रेडलाईट एरिया' मध्ये वेश्या व्यवसाय करणाऱ्या महिलांच्या आरोग्यासाठी काम करत होत्या. आईकडूनच प्रेरणा घेऊन शंकर यांनी एचआयव्ही रुग्णांसाठी समाजसेवा करायला सुरूवात केली.

यासंदर्भात माय मेडिकल मंत्राशी बोलताना शंकर म्हणाले, "पूर्वी वेश्या वस्त्यांमध्ये एचआयव्हीचं प्रमाण प्रचंड होतं. आई वेश्या व्यवसाय करणाऱ्या महिलांच्या आरोग्यासाठी काम करायची. आईच्या पावलावर पाऊल टाकत मी सुद्धा या क्षेत्राकडे वळलो. गरीबीमुळे काय-काय सहन करावं लागतं हे जवळून पाहिलं होतं. त्यामुळे पैशाअभावी कुठल्याही रुग्णाचे उपचार थांबू